श्रीः ।

नैषधकाव्य ।

कविवर वरिष्ठ राजकवि गुमान मिश्र विरचित ।

जिसमें

राजरानी महारानी दमयंतीके स्वयंवरकी कथा अत्यन्त रोचक मनभावन परमसुहावनकवित्त दोहा, चौपाई, कवित्तादिकोंमें वर्णित है ।

वही

विद्याविलासियोंके आनन्दार्थ

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

स्वकीय "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयमें

छापकर प्रगट किया ।

श्रावण संवत् १९५२, शाके १८१७.